कानपुर। शुक्रवार • 4 फरवरी • 2022

राष्ट्रीय सहारा

किसान कैश क्रॉप के रूप में करें सूरजमुखी की खेती

कानपुर (एसएनवी)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानी डॉ.महक सिंह ने किसानों को सूरजमुखी की खेती करने की सलाह देते हुए कहा कि यह खेती कैश क्रॉप के रूप में की जा सकती है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक विधि से खेती कर किसान 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सूरजमुखी का उत्पादन कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के प्रोफेसर डॉ.महक सिंह ने किसानों के लिये सूरजमुखी की खेती की एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि सूरजमुखी महत्वपूर्ण तिलहनी फसलों में है। इसके वीजों से 45 से 50 फीसद तक तेल की प्राप्ति होती है। सूरजमुखी के तेल में 0 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है। उन्होंने वताया कि सूरजमुखी के वीजों में विटामिन वी-1, वी-3, वी-6, मैग्नीशियम, फास्फोरस और प्रोटीन जैसे तमाम पोषक तत्व पाये जाते हैं। जिसके चलते इसके तेल का उपयोग कई आयुर्वेदिक दवाएं वनाने में भी किया जाता है। इस कारण से भी वाजार में इसकी अच्छी खासी मांग रहती है। श्री सिंह ने कहा कि सूरजमुखी की वुवाई के लिये फरवरी का दूसरा पखवारा सर्वोत्तम माना जाता है। उन्होंने किसानों को मॉडर्न, सूर्या, पीवीएनएस-40 जैसी संकुल प्रजातियां और एसएच-3322, केवीएसएच-1,एस-1, एमएसएफएच-17 और वीएसएफ जैसी संकर प्रजातियां वोने की सलाहदी। साथ ही कहा कि वुवाई कतारों में हल के पीछे चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर की जानी चाहिये। प्रत्येक कतार के वीच की दूरी कम से कम 45 सेमी होनी चाहिये। श्री सिंह ने कहा कि एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिये संकुल प्रजातियों के वीज की 12 से 15 किलोग्राम और संकर प्रजातियों के वीज की प्रति हेक्टेयर 5 से 6 किलोग्राम आवश्यकता होती है। उन्होंने सलाह दी कि वुवाई से पूर्व वीजों को 12 घंटे पानी में भिगो कर छाया में 3 से 4 घंटे सुखाने के वाद 2 ग्राम कार्वेंडाजिम से शोधित करने परिणाम वेहतर मिलते हैं। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने पर किसान प्रति हेक्टेयर 29 से 30 क्विंटल सूरजमुखी का उत्पादन कर सकते हैं।

> बीजों से प्राप्त होता है 45 से 50 फीसद तेल

Sign in to edit and save changes to this file.

जन एक्सप्रेस

चंद्रशेखर कृषक समिति की मासिक बैठक स्थगित

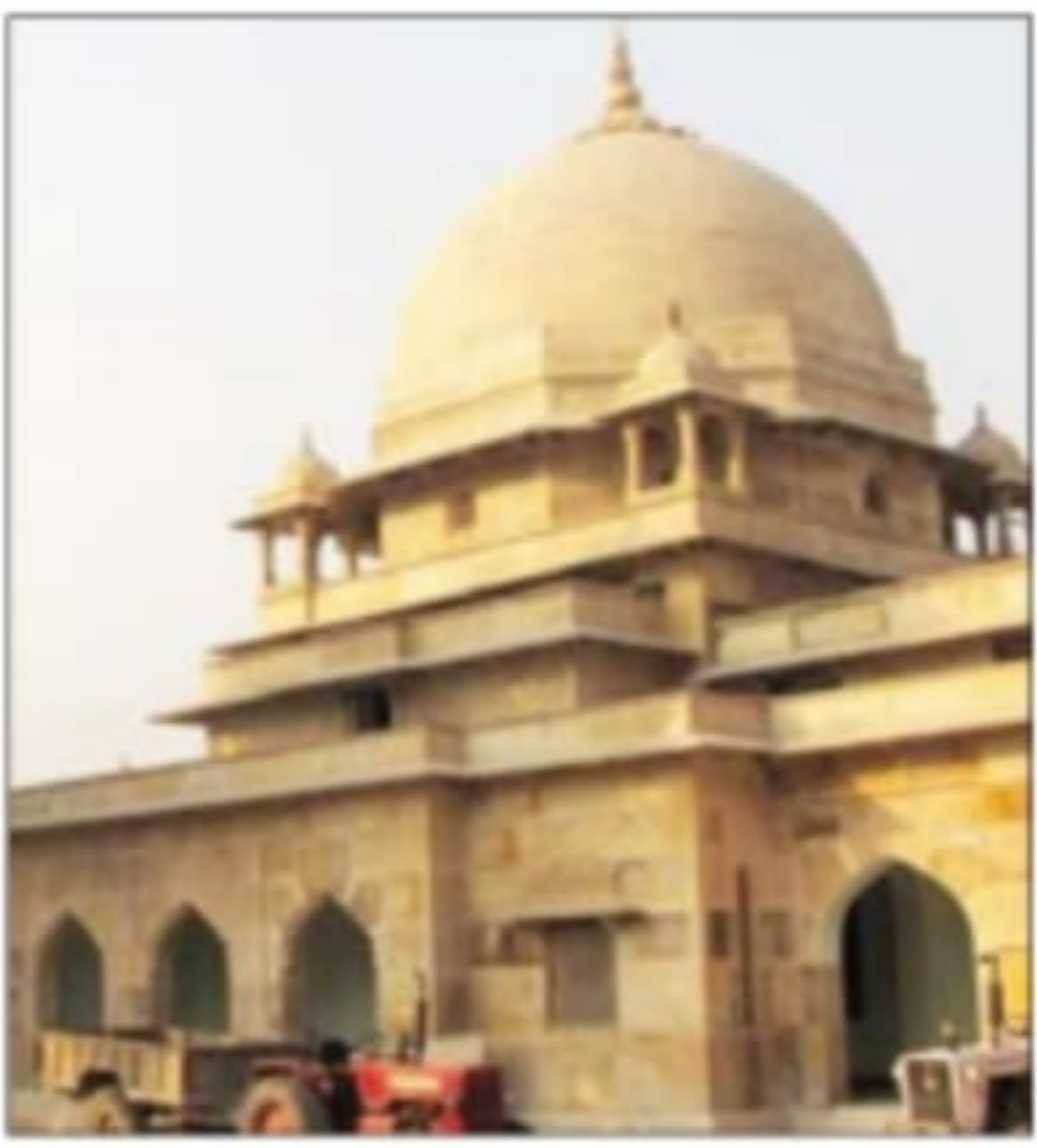

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय में होने वाली प्रत्येक माह की 5 तारीख को चंद्रशेखर कृषक समिति की मासिक बैठक कोविड-19 के चलते इस माह फरवरी में स्थगित कर दी गई है। यह जानकारी समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष जगदीश सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि आगामी बैठक की सूचना समाचार पत्रों के माध्यम से समिति के सदस्यों को दी जाएगी। डॉ. खलील खान ने बताया कि बैठक में किसानों को कृषि, बागवानी, एवं पशुपालन से संबंधित नवीनतम तकनीकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा दी जाती हैं जिससे किसान लाभान्वित हो रहे हैं।

हिंदुस्तान कानपुर 04/02/2022

सूरजमुखी की खेती से अधिक लाभ कमाएं किसान

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देशन पर अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. महक सिंह ने किसानों को सूरजमुखी की खेती करने के लिए प्रेरित किया। कहा, सूरजमुखी महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसके बीजों से 45 से 50 फीसदी तक तेल की प्राप्ति होती है और इसमें प्रोटीन 20 फीसदी तक पाया जाता है। सूरजमुखी के बीजों में विटामिन बी-1, बी-3, बी-6, मैग्नीशियम, प्रोटीन जैसे बहुत सारे पोषक तत्व होते हैं। इसका प्रयोग आयुर्वेद में कई तरह की दवाइयों में किया जाता है।

दैनिक जागरण कानपुर 04/02/2022

प्राकृतिक और आर्गेनिक खेती के लिए दो नए कोर्स

चंद्र प्रकाश गुप्ता ● कानपुर

सीएसए विवि

- एकेडमिक काउंसिल की बैठक में आज होगा दोनों कोर्सों पर अनुमोदन
- आम बजट में भी जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की बात

मिट्टी की सेहत सुधारने और फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए सरकार जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ाने पर जोर दे रही है। इसे देखते हुए चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने भी अब जैविक व प्राकृतिक खेती पर दो नए कोर्स, डिप्लोमा व प्रमाणपत्र, शुरू करने की योजना बनाई है। शुक्रवार को विवि की एकेडमिक काउंसिल की बैठक में इनका अनुमोदन होने की उम्मीद है। जल्द ही दोनों कोर्सों को लागू किया जाएगा। विवि के अधीन संचालित तमाम कृषि विज्ञान केंद्रों के विज्ञानी पहले से ही जीरो बजट वाली प्राकृतिक और जैविक खेती को अपनाने के लिए किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

कुलपति डा. डीआर सिंह ने बताया कि विवि के निर्देशन पर ही संस्थान व कृषि विज्ञान केंद्रों के विज्ञानियों ने वर्ष 2020 में ही प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना शुरू किया था। डेढ़ माह पूर्व प्रधानमंत्री ने भी गुजरात के कृषि विवि की ओर से आयोजित आनलाइन सम्मेलन में जीरो बजट वाली प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की बात कही थी।

परास्नातक स्तर पर भी तमाम पाठ्यक्रम शुरू: विवि ने तीन वर्ष पूर्व स्नातक स्तर पर अत्याधुनिक उद्योगों की जरूरत के मुताबिक कोर्सों की शुरुआत की थी। पिछले शैक्षिक सत्र में परास्नातक और पीएचडी के स्तर पर सभी 14 विभागों के कोर्स रिवाइज किए थे। कुलसचिव डा. सीएल मौर्य ने बताया कि कृषि से संबंधित विभिन्न उद्योगों के साथ उनमें प्रबंधन के बाबत कोर्स चलाए जा रहे हैं। अन्य रोजगार परक कोर्स शुरू किया जा रहा है।

एक हजार से ज्यादा किसान कर रहे प्राकृतिक खेती: कानपुर व आसपास जिलों में वर्तमान समय में एक हजार से ज्यादा किसान प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। उन्होंने रसायनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग बंद कर दिया है और वर्मी कंपोस्ट, केंचुआ जनित खाद, गोबर आदि का प्रयोग शुरू कर दिया है।